प्रातः क्लास 3/11/68 ओमशांति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशांति। अभी बच्चे सामने बैठे हैं। जहाँ-2 से आते हैं वहाँ अपने-2 सेंटर पर जब रहते हैं तो वहाँ ऐसे नहीं समझेंगे कि हम ऊँच ते ऊँच बाबा के सम्मुख बैठे हुये हैं। वही हमारा टीचर भी है, वही हमारी नैया को पार लगाने वाला है, जिसको ही गुरु कहते हैं। यहाँ तुम समझते हो, हम सम्मुख बैठे हैं। हमको इस विषय सागर से निकाल पार क्षीर सागर में ले जाते हैं। पार ले जाने वाला बाप अभी सामने बैठे हैं। वह एक ही शिवबाबा की आत्मा है जिसको ही सुप्रीम ऊँच ते ऊँच भगवान कहा जाता है। अभी तुम बच्चे समझते हो ऊँच ते ऊँच बाबा के सामने बैठे हैं। वह तुमको पार भी पहुँचाते हैं। उनको रथ तो ज़रूर चाहिए ना, नहीं तो श्रीमत कैसे देवे? अभी तुम बच्चों को निश्चय है बाबा हमारा बाबा भी है, टीचर भी है, सद्गुरु भी है। पार ले जाने वाला है। वह बाबा हमको रास्ता बता रहे हैं। वहाँ सेंटर्स पर बैठने और यहाँ सम्मुख बैठने में रात-दिन का फर्क रहता है। वहाँ ऐसे नहीं समझेंगे हम सम्मुख बैठे हैं। यहाँ महसूसता आती है। अभी हम पुरुषार्थ कर रहे हैं। पुरुषार्थ करने वाले को खुशी भी रहेगी, अभी हम पावन बन अपने घर पार जा रहे हैं। जैसे नाटक में एक्टर्स होते हैं, समझते हैं अभी नाटक पूरा हुआ, अब कपड़े बदली कर हम अपने घर जावें। तुमको भी मालूम है अभी 84 का चक्र पूरा हुआ है। अब बाप आये हैं हम आत्माओं को ले जाने। यह भी समझाते हैं तुम घर कैसे जा सकते हो। वह बाप भी है, नैया को पार लगाने वाला खिवैया भी है। वह लोग तो भल गाते हैं; परंतु समझते कुछ भी नहीं हैं। यह नैया किसको कहा जाता है? क्या शरीर को ले जावेंगे? अभी तुम बच्चे समझते हो बरोबर हमारी आत्मा को पार ले जाते हैं। अभी आत्मा इस शरीर के साथ वैश्यालय में विषय वैतरणी नदी में पड़ी है। हम असल में रहवासी शांतिधाम के थे। हमको पार ले जाने वाला अर्थात् घर ले जाने वाला बाप मिला है। हमारी राजधानी थी जो माया रावण ने सारी छीन ली है। वह राजधानी फिर ज़रूर पानी है। बेहद का बाप कहते हैं–हे बच्चो! अभी अपने घर को याद करो। वहाँ जाकर फिर क्षीर सागर में आना है। यहाँ है विख का सागर। वहाँ है क्षीर का सागर और मूल वतन है शांति का सागर। तीनों धाम हैं। यह तो है दुःखधाम। बाप समझाते हैं मीठे-2 बच्चों अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। कहने वाला कौन है? किस द्वारा कहते हैं? सारा दिन मीठे-2 बच्चे कहते रहते हैं। अभी आत्मा पतित है जिस कारण शरीर भी पतित है। आत्मा पावन बन जावेगी तो शरीर भी पावन मिलेगा। आत्मा पतित है तो जेवर (शरीर) भी ऐसा मिलेगा। अभी तुम समझते हो हम पक्के-2 सोने के जेवर थे, फिर खाद पड़ते-2 झूठे बन गये हैं। अभी वह झूठ कैसे निकले, इसके लिए यह याद की यात्रा की भट्ठी है। अग्नि में सोना पक्का होता है ना। बाप बार-बार समझाते हैं, यह समझानी जो तुमको देता हूँ हर कल्प देता आया हूँ। हमारा पार्ट है। फिर 5000 वर्ष बाद भी ऐसे ही कहूँगा। इस ड्रामा के चक्र को तुम अच्छी रीति जानते हो कि 84 का कैसे पार्ट बजाया है। अभी सभी पुकारते रहते हैं; क्योंकि नैया डूबी हुई है विषय सागर में। सतयुग में ऐसे थोड़े ही कहेंगे कि नैया विषय सागर में डूबी हुई है। वहाँ तो क्षीर सागर में रहते हैं। तो ऐसे नहीं कहेंगे। यहाँ विषय सागर में सभी की नैया डूबी हुई है। हम हर 5000 वर्ष बाद आकर कहता हूँ कि बच्चों पवित्र बनो। सतयुग में भी तुम्हारी आत्मा पावन थी। शांतिधाम में भी आत्मा पावन रहती है। वह तो है हमारा घर। कितना मीठा घर है, जहाँ जाने लिए तुम जन्म-जन्मांतर से गुरु आदि करते आये हो; परंतु आत्मा जा नहीं सकती है। उस अपने घर जाने लिए कितना माथा मारते रहते हैं। बाप समझाते हैं अभी सभी को जाना है। फिर बजाने लिए आना है। यह तो बच्चों ने समझा है। बच्चे जब दुःखी होते हैं तो कहते हैं–हे भगवान! हमें अपने पास बुला लो। हमको यहाँ दुःख में क्यों छोड़ा है? जानते हैं बाप परमधाम में रहते हैं, तो कहते हैं–हे भगवान! हमको परमधाम में बुला लो। सतयुग में कब ऐसे नहीं कहेंगे। वहाँ तो सुख ही सुख है। यहाँ तो अनेक प्रकार के अथाह दुःख हैं, तब पुकाराते हैं हे भगवान! आत्मा को याद रहती है तो कहती है हे भगवान अपने पास बुला लो; परंतु भगवान को जानते बिल्कुल ही नहीं। अभी तुम बच्चों को बाप

का भी मालूम पड़ा है। बाप रहते ही हैं परमधाम में। घर को ही याद करते हैं। ऐसे कब नहीं कहेंगे राज(धानी) में बुला लो। राजधानी के लिए कब कहेंगे ही नहीं। बाप तो राजधानी में रहते भी नहीं। वह रहते ही हैं श(ांति)धाम में। सभी माँगते भी शांति है। परमधाम में भगवान पास तो ज़रूर शांति ही होगी, जिसको मुक्ति कहा जाता है। वह है आत्माओं का रहने का स्थान, जहाँ से आत्माएँ आती हैं। सतयुग को घर नहीं कहेंगे। वह है राजधानी। अभी तुम कहाँ-2 से आये हो। यहाँ आकर सम्मुख बैठे हो। बाप बच्चे-2 कह बात करते हैं। बाप के रूप में बच्चे-2 ही कहते हैं। टीचर बन सृष्टि के आदि-मध्य-अंत का राज़ अथवा हिस्ट्री जॉग्राफी सम(झाते) हैं। यह बातें कोई शास्त्रों में नहीं हैं। तुम बच्चे जानते हो मूलवतन है हम आत्माओं का घर। सूक्ष्मवतन तो ..... ही दिव्य दृष्टि की बात। बाकी सतयुग-त्रेता, द्वापर-कलियुग यहाँ ही होता है। पार्ट भी तुम यहाँ बजाते ..... सूक्ष्मवतन का कोई पार्ट नहीं। यह सा॰ की बात है। रहने का स्थान है ही यह। सुखधाम सतयुग को कहा जाता है। कल की बात है। दुःखधाम की बात नहीं। कल और आज यह तो अच्छी रीत बुद्धि में होनी चा(हिए)। कल हम सतयुग में थे। फिर 84 जन्म लेते-2 आज नर्क में आ गये हैं। बाप को बुलाते भी नर्क में हैं। सतयुग में तो अथाह सुख है, तो कोई भी बुलाते नहीं। यहाँ तुम शरीर में हो तब बात करते हो। बाप कहते हैं मैं जानी-जाननहार हूँ अर्थात् सृष्टि के आदि-मध्य-अंत को जानता हूँ; परंतु सुनाऊँ कैसे? विचार ..... बात है ना। इसलिए लिखा भी हुआ है बाप रथ लेते हैं। कहते हैं, मेरा जन्म तुम्हारे सदृश्य नहीं है। मैं तो इसमें प्रवेश करता हूँ। रथ का भी परिचय देते हैं। यह आत्मा भिन्न-2 नाम-रूप धारण करती है। अभी आकर तमोप्रधान बनी है। इनको ही छोरा कहते हैं। इस समय सभी छोरे हैं; क्योंकि बाप को नहीं जानते हैं तो सभी छोरे और छोरियाँ हो गईं। आपस में जब लड़ते हैं तो कहते हैं ना छोरे-छोरियाँ लड़ती क्यों हो। तो बाप कहते हैं मुझे सभी भूल गये हैं। आत्मा ही कहती है छोरे और छोरियाँ, लौकिक बाप भी कहते हैं। ..... का बाप भी ऐसे ही कहते हैं। छोरे-छोरियाँ यह तुम्हारा क्यों हुआ है? कोई धणी-धोणी है? तुमको बेहद का बाप जो स्वर्ग का मालिक बनाते हैं, जिसको तुम आधा कल्प से पुकारते आये हो, उनके लिए कहते हो ठिक्कर-भित्तर में है। ..... बाप अभी सम्मुख बैठ समझाते हैं, अभी तुम बच्चे समझते हो हम बाबा के पास आये हैं। यह बाबा ही हमको पढ़ाते हैं। हमारी नैया पार करते हैं; क्योंकि यह नैया बहुत ही पुरानी हो गई है। तो कहते हैं इनको पार लगाओ। फिर हमको नई दो। पुरानी नैया खोफनाक होती है। कहाँ रास्ते में टूट ..... तो एक्सीडेंट हो जाये। तो तुम कहते हो हमारी नैया पुरानी हो गई हैं, अभी हमें नई दो। इनको ..... भी कहते हैं। नैया भी कहते हैं। बाबा हमको तो ऐसी (ल॰ना॰) वस्त्र चाहिए। आत्मा कहती है। बाप कहते हैं मीठे-2 बच्चों स्वर्गवासी बनने चाहते हो तो! हर 5000 वर्ष बाद तुम्हारा यह कपड़ा पुराना होता है फिर देता हूँ। यह है आसुरी चोला। आत्मा भी आसुरी है। मनुष्य होंगे तो कपड़े भी गरीबी के पहनेंगे। साहूकार होंगे तो कपड़े भी साहुकार के पहनेंगे। यह बातें अभी तुम समझते हो। यहाँ तुमको नशा चढ़ता है हम किसके ..... बैठे हैं। सेंटर पर बैठते हो तो वहाँ तुमको यह भासना नहीं आवेगी। यहाँ सम्मुख होने में कशिश होती है; क्योंकि बाप डायरैक्ट बैठ समझाते हैं। वहाँ कोई समझावेंगे तो बुद्धियोग कहाँ भागता रहेगा। कहते हैं ना गो..... धंधे में फंसे रहते हैं, फुर्सत ही कहाँ मिलती है। यहाँ तो प्रैक्टिकल में बाप कहते हैं मैं तुमको समझा रहा .... भी समझो बाबा हमको इस मुख द्वारा समझाते हैं। इस मुख की भी कितनी महिमा है। गऊमुख से अमृत ..... लिए कहाँ-2 जाकर धक्का खाते हैं। कितनी मेहनत से जाते हैं। है सभी झूठ। मनुष्यों में तो समझ नहीं है न... यह गऊमुख क्या है। कितने बड़े-2 समझदार मनुष्य जाते हैं। इसमें फायदा क्या, और ही टाइम वेस्ट होता ..... बाप कहते हैं यह सूर्य उदय होना आदि क्या देखेंगे, फायदा तो इनमें कुछ है नहीं। फायदा होता ही है पढ़.... में। गीता में पढ़ाई है ना। गीता में कोई भी हठयोग आदि की बात ही नहीं, उसमें तो राजयोग है। तुम

भी हो राजाई लेने लिए। तुम जानते हो इस आसुरी दुनिया में तो कितनी लड़ाई-झगड़े आदि हैं। बाबा तो हमको योगबल से पावन बनाये विश्व का मालिक बना देते हैं। देवियों आदि को हथियार दे दिये हैं; परंतु वास्तव में इसमें हथियार आदि कोई बात ही नहीं। काली को देखो कितना भयानक बनाया है! यह भी अपने-2 मन की भ्रांतियों से बैठ बनाया है। देवियाँ कोई 4/8 भुजा वाली थोड़े ही होती हैं। यह भक्तिमार्ग में क्या-2 होता है सो बाप बैठ समझाते हैं। यह एक बेहद का नाटक है। इसमें कोई की निंदा आदि ... बात ही नहीं। अनादि ड्रामा बना हुआ है। इसमें कुछ भी फर्क पड़ता नहीं है। ज्ञान किसको कहा जाता है, भक्ति किसको कहा जाता है, यह बाप ही बैठ समझाते हैं। भक्तिमार्ग से फिर भी तुमको पास करना पड़ेगा। ऐसे नहीं कि तुम 84 का चक्र लगाते-2 नीचे आवेंगे। यह अनादि बना बनाया बड़ा ही अच्छा नाटक है, जो बाप बैठ समझाते हैं। ड्रामा के राज़ को भी समझने से तुम विश्व के मालिक बन जाते हो। वण्डर है ना। भक्ति कैसे चलती है, ज्ञान कैसे चलता है, यह नाटक बना हुआ है। नाटक तो नाटक ही है। उसमें हम पार्ट बजाते हैं। यह भी बाप समझाते हैं। यह खेल अनादि बना हुआ है। इसमें कुछ भी चेंज नहीं हो सकता। वह तो कह देते ब्रह्म में लीन हो गया। ज्योति ज्योत समाया। यह संकल्प की दुनिया है। जिसको जो आता है वह कहते रहते हैं। संकल्प की दुनिया है फिर तो कोई बात ही नहीं। यह तो अनादि बना बनाया खेल है। मनुष्य बायस्कोप देखकर आते हैं क्या इसको संकल्प का खेल कहेंगे? बाप बैठ समझाते हैं, यह बेहद का नाटक है जो हूबहू रिपीट होगा। बाप ही आकर यह नॉलज देते हैं; क्योंकि वही नॉलेजफुल है। मनुष्य सृष्टि का बीजरूप है। चैतन्य है। इनको ही सारी नॉलेज है। मनुष्यों ने तो लाखों वर्ष आयु दिखा दी है। बाप कहते हैं इतनी आयु थोड़े ही हो सकती है। बायस्कोप लाखों वर्ष का हो तो कोई की बुद्धि में भी नहीं बैठे। तुम तो सारा वर्णन करते हो। लाखों वर्ष की बात कैसे वर्णन करेंगे? तो वह सभी हैं भक्तिमार्ग। तुमने ही भक्तिमार्ग का पार्ट बजाया। ऐसे-2 दुःख भोगते-2 अभी अंत में आ गये हो। सारा झाड़ पुराना जड़ जड़ीभूत अवस्था को पाया हुआ है। अभी वहाँ जाना है। अपन को हल्का कर दो। इसने भी हल्का कर दिया ना, तो सभी बंधन टूट जाये। नहीं तो बच्चे, धन, कारखाने, ग्राहक, राजे-रजवाड़े याद आते रहेंगे। धंधा ही छोड़ दिया तो क्यों फिर याद आवेगा। यहाँ तो सभी कुछ भूलना है। इनको भूल अपने घर और राजाई को याद करना है। शांतिधाम और सुखधाम को याद करना है। शांतिधाम, फिर हमको यहाँ आना पड़े। बाप कहते हैं मुझे याद करो। इनको ही योग अग्नि कहा जाता है। यह राजयोग है ना। तुम राजऋषि हो। ऋषि पवित्र को कहा जाता है। तुम पवित्र बने हो राजाई के लिए। वह हठयोगी ऋषि हैं, निवृत्ति मार्ग वाले हैं। वह कब शांतिधाम, सुख का रास्ता बता न सकें। बाप ही रास्ता बता सकते हैं। वह तो कहते हैं हम ब्रह्म में लीन हो जावेंगे। भगवानुवाच यह झूठ बोलते हैं। बाप ही सत्य बताते हैं। तुम भी समझते हो यह नाटक है। सभी एक्टर्स यहाँ ज़रूर होने चाहिए। फिर बाप सभी को ले जावेंगे। यह ईश्वर की बारात है ना। वहाँ बाप और बच्चे रहते हैं। मुझे याद ही दुख में करते हैं, तो वहाँ फिर मैं क्या करूँगा? तुमको शांतिधाम सुखधाम में भेजा, बाकी क्या चाहिए? तुम सुखधाम में थे तो बाकी सभी आत्माएँ शांतिधाम में थीं। फिर नम्बरवार आते गये। नाटक आकर पूरा हुआ। बाप कहते हैं बच्चे अभी गफलत मत करो। पावन तो ज़रूर बनना है। अबलाओं पर अत्याचार तो गाये हुये हैं, तब तो द्रौपदी ने पुकारा ना। तुम सभी हो द्रौपदियाँ, वह है दुशासन। एक/दो नंगन करते हैं। नाम करके एक का दिया है। पुकारते तो ढेर हैं। दुशासन नंगन करते हैं, तब बाप को याद करते हैं। बाबा हमको यह नंगन करते हैं। हम परवश हैं। छोड़ते ही नहीं हैं। बाप कहते हैं यह वही ड्रामा अनुसार पार्ट बज रहा है। तुम्हारे लिए ही ड्रामा अनुसार मैं कल्प-2 आता हूँ। नई दुनिया में अभी चलना तो है ना। नई दुनिया और पुरानी दुनिया की आयु एक्युरेट है। एक सेकण्ड का भी फर्क नहीं पड़ सकता। तुम्हारे पार्ट में भी फर्क नहीं हो सकता। बाप सम्मुख बैठ समझाते हैं। कहते हैं मीठे-2 बच्चों पावन बनो। पढ़ाते भी बहुत ऊँच है यह ल॰ना॰ बनाने लिए। इस बाबा के आत्मा को भी पढ़ाकर भविष्य में यह बनावेंगे।

कहते हैं बाबा आप तो पढ़ाकर कल्प-2 हमको यह बनाते हो। एमऑबजेक्ट यह है। हम स्वर्ग में तो ज़रूर जावेंगे। बाकी तो जितना पढ़ेंगे-पढ़ावेंगे उतना ही ऊँच पद पावेंगे। यह भी समझते हो सिवाय पवित्रता के बेड़ा पार न होगा; परंतु असुरों के बंधन में हैं। वह कितना मारते-पीटते, दुख देते हैं। दोस्तों को, भाइयों को ले आकर नंगन करते हैं। दवाई सुँघाकर भी अपनी आस पूरी कर लेते हैं। छोड़ते नहीं हैं। शरा(ब) पीते हैं तो फिर जैसे जिन हो जाते हैं। वह बिचारी रड़ियाँ मारती रहती हैं। गुस्से में आकर मार भी डालते हैं। अबलाओं पर अत्याचार गाये हुये हैं। आजकल तो स्त्रियाँ भी गुस्से में आकर पति को मार डालती हैं। उनको कहा जाता है दुखधाम। बाप सभी राज़ समझाते रहते हैं। घर जाने का, फिर राजधानी में आने का राज़ भी समझाते हैं। भगवानुवाच मैं तुमको राजयोग सिखलाता हूँ। अक्षर तो बिल्कुल ठीक है। गीता में आटे में लून है। भगवानुवाच ठीक है। फिर कृष्ण अक्षर डालने से झूठ हो गई है। भगवानुवाच मैं साधुओं का भी उद्धार करने आता हूँ; क्योंकि वह भी पापात्माएँ हैं। भ्रष्टाचार से पैदा होते हैं। यह सारी दुनिया ही भ्रष्टाचारी है। रावण के सम्प्रदाय हैं। विख से पैदा होते हैं। सन्यासी भी विख से पैदा होते हैं, फिर सन्यास करते हैं। ल॰ना॰ कब वहाँ सन्यास करते हैं क्या? यह तो सदैव पुण्यात्मा, महात्मा ही हैं। यहाँ तो सभी विकार से पैदा होते हैं, तो महात्मा किसको कहें? तुम कहेंगे सभी महात्मा (देवी-देवता) तो हम बन रहे हैं। सन्यासी हैं निवृत्ति मार्ग वाले। उन्हों का धर्म ही बिल्कुल अलग है। वह तो आते ही हैं बाद में। वह राजयोग कैसे सिखावेंगे, जिन्होंने राज्य कब पाया ही नहीं। बाकी अपने को बचाने की कोशिश करनी है। अत्याचार तो होंगे। हिम्मत चाहिए। भूख तो कब कोई मर न सके। शिवबाबा का बना और भूख मरे यह कब हो नहीं सकता। जैसे गरीबों की परवरिश होती है वैसे ही साहूकारों की होती है। कोई भी भूख मर न सके। सरेण्डर कर दिया, सभी कुछ शिवबाबा को दे दिया उससे वर्सा लेने लिए। दे दिया, तो वर्सा भी याद पड़ेगा, नहीं तो जो वस्तु रखी होगी वह याद पड़ती रहेगी। बाप आत्माओं से बात करते हैं। यह शरीर तो दुम्ब है। मनुष्यों का शरीर से कितना प्यार होता है। तुम्हारा प्यार है आत्मा से, न कि शरीर से। वह शरीर को ही याद करते रहते। तुमको अभी शिक्षा मिलती है शिवबाबा को याद करना है। शरीर तो सभी के छूटने हैं। बाकी थोड़ा समय है। तुम्हारी बुद्धि में सारा चक्र है। कैसे 5000वर्ष में यह चक्र फिरता है। अभी झाड़ पुराना हो गया, अपन को देवता कोई कह न सके। है बरोबर आदि सनातन देवता धर्म के; परंतु पतित होने कारण अपन को देवता कह न सके। तुम पूछते हो हिन्दूधर्म कहाँ से आया, इन ल॰ना॰ का देवता धर्म किसने स्थापन किया। यह किसको भी पता नहीं है। कोई भी बता न सके कि इन्हों का यह धर्म किसने स्थापन किया। कोई जानते ही नहीं। अभी तुमको बाप बैठ समझाते हैं, इन्होंने कैसे राज्य पाया। आगे जन्म में बाप द्वारा ही राजयोग सीखे हैं। संगमयुग भी था। अभी तुम बाप के सम्मुख बैठे हो। तुमको बड़ी खुशी होती है। शिवबाबा हमको सम्मुख सभी बातें समझाते हैं। फिर कल्प-2 ऐसे ही चक्र फिरता रहेगा। यह मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ कैसे वृद्धि को पाता है। सा(रा) तुम्हारी बुद्धि में है। सन्यासी कब सुना न सके। वह है हठयोग सिखलाने वाले। तुम राजऋषि हो। उनका है हठयोग। यह राजयोग और कोई सिखला न सके। अभी तुम जानते हो बरोबर सतयुग में इन देवताओं को यह राजाई शिवबाबा ने दी। आगे तो तुमको यह स्वप्न में भी याद नहीं था। कब सुना भी नहीं। अभी समझते हो यह तो हम (ही) थे। हमने 84 का चक्र खाया। अभी फिर हम यह बनते हैं। हम सो ब्राह्मण, फिर हम सो देवता, हम सो क्षत्रिय बनेंगे। वह तो कह देते हैं हम आत्मा सो परमात्मा। अभी तुम समझते हो हम सो ब्राह्मण चोटी हैं, फिर हम सो देवता बनेंगे। हम सो क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र बनेंगे। यह बाजोली खेलते हैं। सारा 84 के चक्र का ज्ञान बुद्धि में आ जाता है। तुम बच्चों को कशिश होती है सम्मुख जाकर सुनें। गर्म-2 फुलका खावें। वहाँ तो बासी हो जाती, बाबा पास जाकर ताजा-2 फुलका खावें। जिनको गर्म फुलके का मज़ा बैठ जाता है, वह तो घड़ी-2 भागते हैं। (गर्म) फुलके में बड़ा ही मज़ा है। सच पूछो तो मेरे को तो बहुत मज़ा आता है गर्म-2 फुलका खाने में। सबसे (गर्म तो) मैं खाता हूँ ना। तो मेरे को बहुत मज़ा आता है। दिल होती है सारा दिन खाता रहूँ। अच्छा2, मीठे-2 रूहानी बच्चों को रूहानी बापदादा का यादप्यार गुडमॉर्निंग और नमस्ते।